MP Board Class 8th Sanskrit Notes Chapter 14 देवी अहिल्या

देवी अहिल्या हिन्दी अनुवाद

अञ्जना :
हरिः ॐ! भ्रातः भवान् कुल आगच्छति?

अङ्केशः :
भगिनी, मालवप्रदेशतः आगच्छन् अस्मि।

अञ्जना :
तव जन्मदेश: मध्यप्रदेशस्य मालवक्षेत्रे वर्तते किम्? तत्र को विशेषः?

अङ्केश :
आम्! विक्रमादित्य-भोजराजाभ्यामपोषिते मालवक्षेत्रे अहिल्यायाः प्रजावात्सल्यम् इति विषयम् अधिकृत्य लेखनप्रतियोगिता आसीत्।

अञ्जना :
तर्हि, कथय मे अहिल्यावृत्तम्। श्रोतुम् इच्छामि।

अनुवाद :
अंजना-हलो! भाई आप कहाँ से आ रहे हो?

अंकेश :
बहन, मालव प्रदेश से आ रहा हूँ।

अंजना :
तुम्हारा जन्म का स्थान मध्य प्रदेश के मालव क्षेत्र में है क्या? वहाँ क्या विशेष है?

अंकेश :
हाँ! विक्रमादित्य और भोज राजा के द्वारा पोषित मालव क्षेत्र में अहिल्या का प्रजा प्रेम' इस विषय के आधार पर लेखन प्रतियोगिता थी।

अंजना :
तो, मुझे अहिल्या का चरित्र बताओ। सुनना चाहती हूँ।

अङ्केशः :
सुशीलाबाई-माणकोजी इति। अनयोः सुपुत्री आसीत्। अहिल्याबाई महाराष्ट्रस्य चौण्डीग्रामे पंचविंशत्युत्तरसप्तदश ख्रिस्ताब्दे (१७२५) मईमासस्य एकत्रिंशे (३१) दिनाङ्के जन्म अलभत।

अञ्जना :
नर्मदा-क्षिप्रा-शिवनाचम्बलनदीभिः सम्पन्नस्य मालवक्षेत्रस्य वधूः खण्डेरावस्य पत्नी खलु अहिल्याबाई?

अङ्केश :
आम! सूबेदार मलाररावस्य पुत्रवधूः मालवप्रजानां सर्वस्वम् आसीत्। अहिल्यायाः व्यक्तित्वं बहुमुखि प्रतिभासम्पन्नं वर्तते स्म। एषा प्रजावत्सला, धर्मपरायणा, न्यायनिष्ठा महिला आसीत्। इन्दौरनगरे तस्याः राजवाड़ा क्षेत्रं सुन्दरम् पवित्रं च अस्ति। अद्यापि राजवाड़ास्थलम् इन्दौरनगरस्य हृदयमिव प्रेक्षणीयं वर्तते। अत्र देशविदेशेभ्यः यात्रिकाः दर्शनार्थम् आगच्छन्ति।

अनुवाद :
अंकेश :
(अहिल्याबाई) सुशीलाबाई और माणकोजी इन दोनों की
सुपुत्री थी। अहिल्याबाई ने महाराष्ट्र के चौण्डी ग्राम में सत्रह सौ पच्चीस (1725) ईस्वी में मई महीने की इकत्तीस (31) तारीख को जन्म पाया।

अंजना :
नर्मदा, क्षिप्रा, शिवना और चम्बल नदियों से सम्पन्न मालव क्षेत्र की वधू और खण्डेराव की पत्नी क्या अहिल्याबाई थीं ?

अंकेश :
हाँ! सूबेदार महारराव की पुत्रवधू मालव की प्रजा की सब कुछ थी। अहिल्या का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न रहता था। वह प्रजा से प्रेम करने वाली, धर्मपरायण, न्यायनिष्ठ महिला थीं। इन्दौर नगर में उनका राजवाड़ा क्षेत्र सुन्दर और पवित्र है। आज भी राजवाड़ा स्थल इन्दौर नगर के हृदय की तरह देखने योग्य है। यहाँ देश-विदेश से यात्री दर्शन के लिए आते हैं।

अञ्जना :
स्मर न तस्याः धर्मनिष्ठाम्। स्वपुत्रस्य मालेरावस्य मरणानन्तरं नर्मदातीरम् इन्दौरसमीपस्थम् महेश्वरस्थानं राजधानी चकार।

अङ्केश :
पुनः पुनः स्मरतु। प्राचीनकालतः अवन्तिकानाम्नी प्रसिद्धा उज्जयिनी, माहिष्मतीनाम्ना प्रशस्तः महेश्वरञ्चेति स्थानद्वयं मालवक्षेत्रे अन्तर्भवति।

अञ्जना :
राज्ञा महिष्मता निर्मिता माहिष्मती अधुना 'महेश्वरनगरमेव' अस्ति। अनूपदेशस्य राज्ञः सहस्रर्जुनस्य राजधानी अपि आसीत्।

अनुवाद :
अंजना-उनकी धर्म निष्ठा को याद कर रहा हूँ। अपने पुत्र मालेराव की मृत्यु के बाद नर्मदा के किनारे इन्दौर के पास महेश्वर (नामक) स्थान को राजधानी बनाया।

https://www.evidyarthi.in/

अंकेश :
फिर से याद करो। प्राचीन काल से अवन्तिका नाम की प्रसिद्ध उज्जयिनी और माहिष्मती नाम से प्रशंसनीय महेश्वर ये दोनों स्थान मालव क्षेत्र के अन्तर्गत हैं।

अंजना :
राजा महिष्मत् के द्वारा निर्मित माहिष्मती अब 'महेश्वर' नगर ही है। अनूपदेश के राजा सहस्रार्जुन की राजधानी भी थी।

अङ्केशः :
अथ किम्! रामायण-महाभारतग्रन्थयोः बौद्धजैनधर्मग्रन्थेषु अपि महेश्वरस्य उल्लेखो वर्तते। कालिदासविरचिते. रघुवंशे माहिष्मती-वर्णनमस्ति। आदिशङ्करमण्डनमिश्रयोः मध्ये शास्त्रार्थचर्चा महेश्वरस्थाने एव अभवत्, एतदेव पुण्यक्षेत्रम् अहिल्यायाः राजधानी च अभवत्।

अञ्जना :
अहिल्याबाई धीरा, शासनप्रवीणा च आसीत् इति पठितवती।

अङ्केशः :
आम्! आम्, सत्यं खल। तस्याः शासनव्यवस्था, अर्थनीतिः, रक्षानीतिः, विद्याप्रीतिः च विशिष्टा इति ज्ञायते।

अनुवाद :
अंकेश :
और क्या! रामायण महाभारत ग्रन्थों में और बौद्ध जैन धर्म
ग्रन्थों में भी महेश्वर का उल्लेख है। कालिदास के द्वारा रचित रघुवंश (महाकाव्य) में माहिष्मती का वर्णन है। आदि शंकराचार्य और मण्डनमिश्र के बीच शास्त्रार्थ चर्चा महेश्वर स्थान पर ही हुई और यही पुण्यक्षेत्र अहिल्या की राजधानी हुई।

अंजना :
अहिल्याबाई धीरे और शासन में प्रवीण थीं ऐसा पढ़ा है।

अंकेश :
हाँ! हाँ! निश्चय ही सत्य है। उनकी शासन व्यवस्था, अर्थनीति, रक्षानीति और विद्या के प्रति प्रेम अद्वितीय था, ऐसा जाना जाता है।

अञ्जना :
अहो भाग्यम् मालवक्षेत्रस्य। जयतु कीर्तिशेषा अहिल्याबाई।

अङ्केशः :
जयतु, जयतु लोकमाता अहिल्याबाई।

उभौ :
सर्वंसहा जितक्रोधाऽहिल्याबाईति कीर्तिता।
धर्मार्थकाममोक्षेषु निरता राजते सदा॥

अनुवाद :
अंजना :
ओह! मालव क्षेत्र का भाग्य। केवल यश के रूप में जीने वाली अहिल्याबाई की जय हो।

अंकेश :
लोकमाता अहिल्याबाई की जय हो, जय हो।

दोनों :
धरती क्रोध को जीतने वाली अहिल्याबाई से प्रसिद्ध हुई। जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में सदा लगी हुई सुशोभित होती हैं।

शब्दार्थाः

प्रजावत्सल्यम् = प्रजा प्रेम। दम्पती = पति और पत्नी। पञ्चविंशत्युत्तरसप्तदश = 1725, (पंचविंशति = 25, उत्तरे = आगे, सप्तदश = 17)। एकत्रिंश=31 अलभत = पाया/प्राप्त किया। सर्वस्वम् = सब कुछ। बहुमुखीप्रतिभासम्पन्नम् = बहुत प्रकार की प्रतिभा से सम्पन्न। विशिष्टा = अद्वितीय, विशिष्ट। कीर्तिशेषा = केवल यश के रूप में जाने वाली। सहा = धरती। जितक्रोधा= क्रोध को जीतने वाली। धर्मार्थकाममोक्षेषु = धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में। चतुर्विधपुरुषार्थाः = चत्वारः धर्मः, अर्थः, कामः, मोक्षश्च।

https://www.evidyarthi.in/